RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा-12 इतिहास

हिंदी माध्यम

ARJUN BATCH

यान्त्रिय नजरिये



Chapter-5 | Part-3

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

आज क्या पढेंगे ?

1. फ्रांस्वा बर्नियर
2. पूर्व और पश्चिम की तुलना
3. अल-बरुनी तथा संस्कृतवादी परम्परा
4. वर्ण व्यवस्था
5. मानव सिर तथा गिरिदार फल

फ्रांस्वा बर्नियर

फ्रांस → Dr + धर्मनिक → भारत

मुगल

↳ शाहजहां

दाराशिकोह



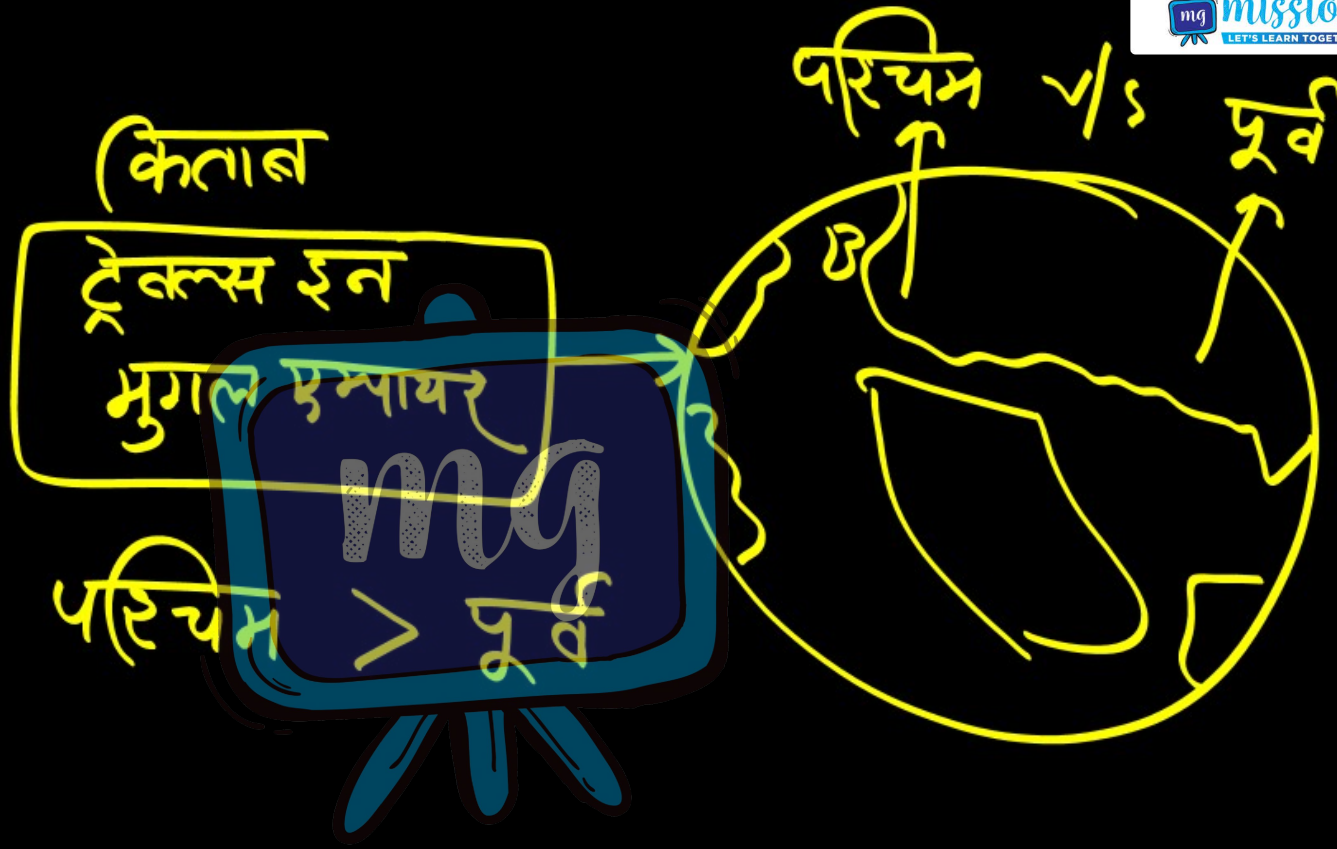
किताब
ट्रैवल्स इन
मुगल एम्पायर
पश्चिम > पूर्व
पश्चिम v/s पूर्व

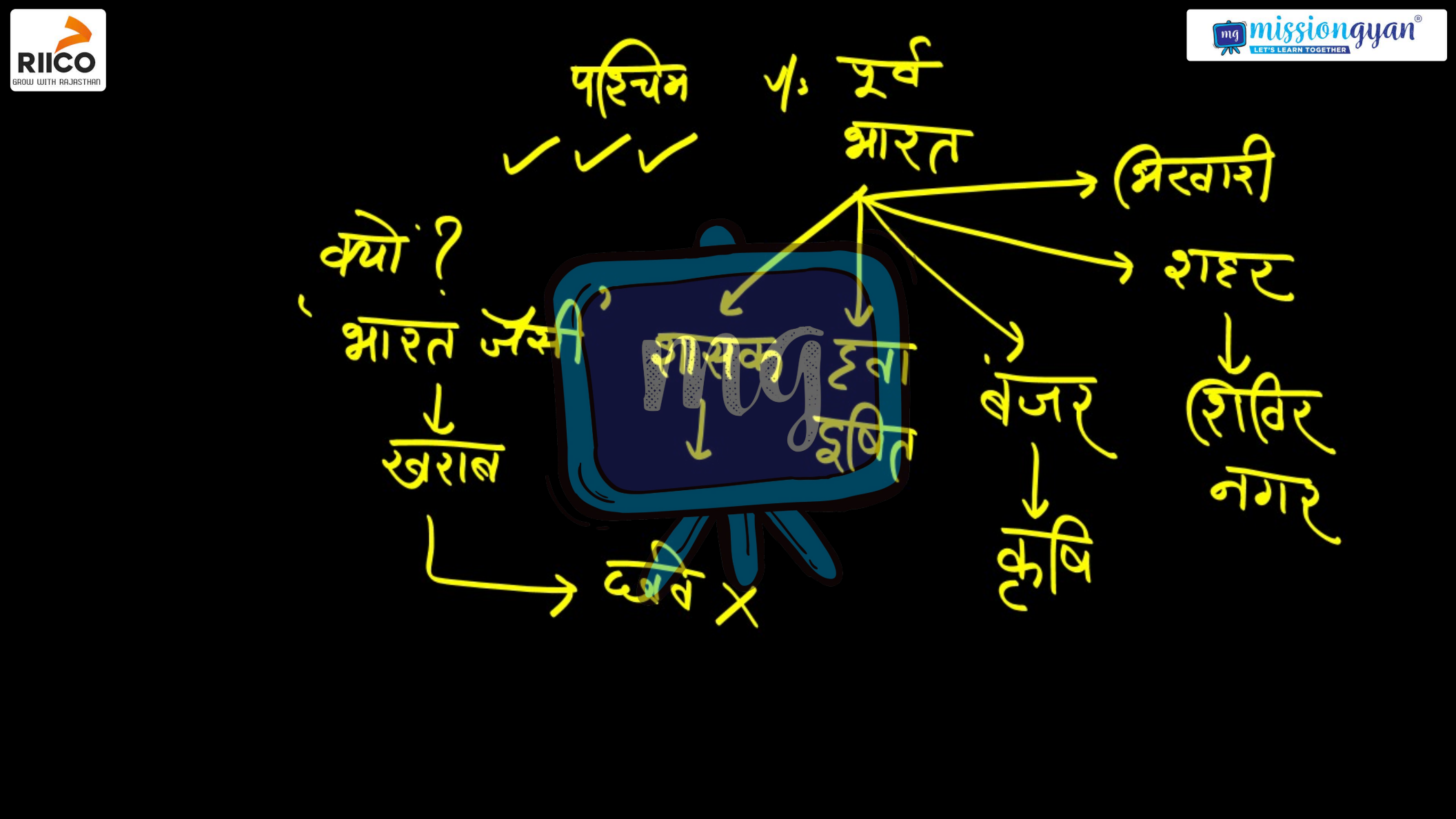

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

पश्चिम v/s पूर्व

✓ ✓ ✓

भारत

- शासक
- हवा
- दूषित
- बंजर → कृषि
- शहर → शिविर नगर
- भिखारी

क्यों ?

'भारत जैसी'

↓

खराब

→ छवि ×

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

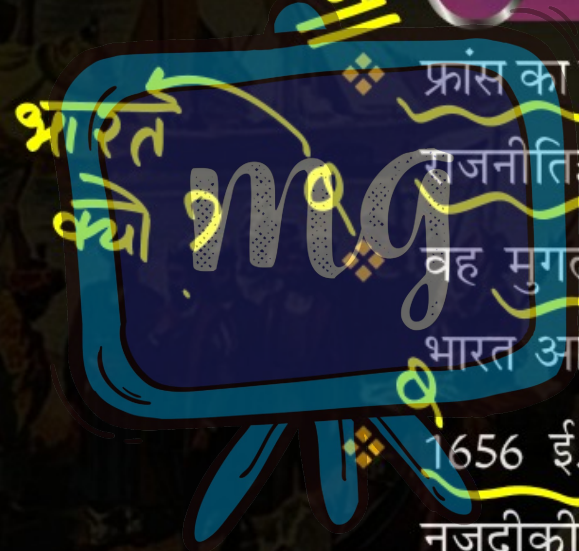

फ्रांस्वा बर्नियर

- फ्रांस का निवासी फ्रांस्वा बर्नियर एक चिकित्सक, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक तथा एक इतिहासकार थे। वह मुगल साम्राज्य में अवसरों की तलाश में भारत आया।
- 1656 ई. से 1668 ई. तक मुगल दरबार से नजदीकी से जुड़ा रहा।
- सम्राट शाहजहाँ के ज्येष्ठ पुत्र द्वारा शिकोह के चिकित्सक के रूप में कार्य किया था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- बाद में आर्मीनियाई अमीर दानिशयंद खान के साथ बुद्धिजीवी व दार्शनिक के रूप में कार्य किया।

पुस्तक :- ट्रेवल्स इन मुगल एम्पायर

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

यूरोप

एशिया

भारत

"पूर्व" और "पश्चिम" की तुलना

- बर्नियर ने देश के कई भागों की यात्रा की एवं उसे अपने वर्णन में शामिल किया।
- भारतीय प्रदेशों के वर्णन की तुलना वह यूरोपीय स्थिति से करता था।
- लगभग प्रत्येक दृष्टांत/वर्णन में उसने भारतीय विकास की स्थिति को यूरोप के मुकाबले दयनीय/कमजोर बताया है।

- हालांकि उसका वर्णन/आंकलन सदैव सटीक नहीं था।
- बर्नियर के मुगल सेना के साथ कई यात्राएँ की। कश्मीर कूच के वर्णन को उसने अपने वृत्तान्त में शामिल किया है।
- बर्नियर ने अपनी प्रमुख कृति को फ्रांस के शासक लुई चौदह को समर्पित किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- बर्नियर के कार्यों का फ्रांस में 1670–71 में प्रकाशन हुआ था।
- अगले 5 वर्षों में अंग्रेजी, डच, जर्मन तथा इतालवी भाषा में अनुवाद हो गया।
- 1670 से 1725 में मध्य बर्नियर का वृत्तान्त आठ (8) बार पुनमुर्दित हो चुका तथा 1684 तक तीन (3) बार अंग्रेजी में पुनमुर्दित हुआ था।

Q. फ्रांस्वा बर्नियर जीवन ?

Q. पूर्व और पश्चिम की तुलना ?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

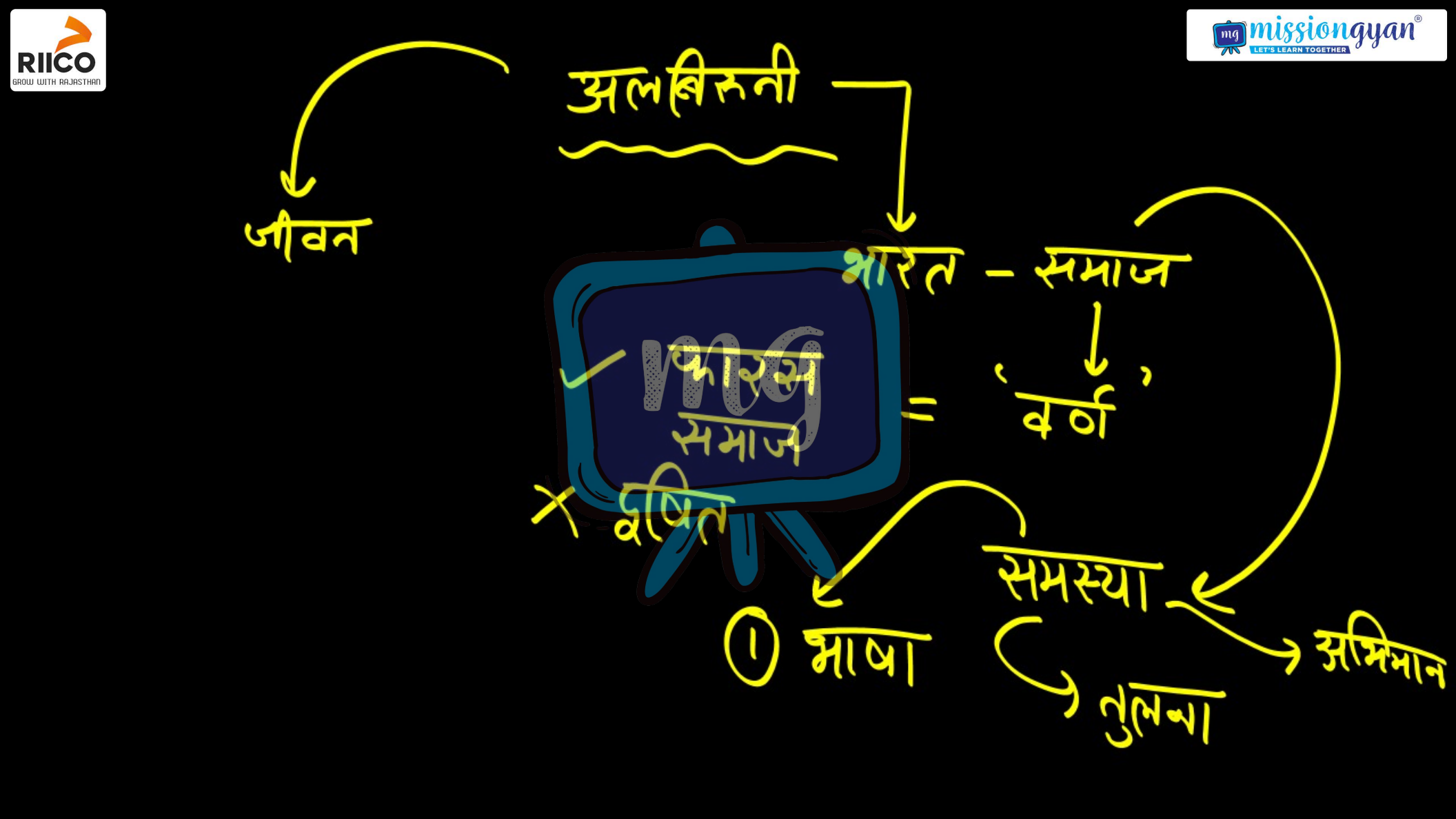

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अल-बिरूनी तथा संस्कृतवादी परम्परा

- विदेशी यात्रियों ने उपमहाद्वीप में जो भी देखा, सामान्तः उसकी तुलना उन्होंने उन प्रथाओं से की जिनसे वे परिचित थे।
- अल-बिरूनी अपने लिए निर्धारित उद्देश्य में निहित समस्याओं से परिचित था जो उसके अनुसार समझ में बाधक तत्व थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1. पहला अवरोध भाषा था। उसके अनुसार संस्कृत, अरबी व फारसी से इतनी भिन्न थी कि विचारों व सिद्धांतों को एक भाषा से दूसरी में अनुवादित करना आसान नहीं था।
2. दूसरा अवरोध धार्मिक अवस्था और प्रथा में भिन्नता थी।
3. तीसरा अवरोध अभिमान था।

- अल-बिरूनी समस्याओं से परिचित होते हुए भी लगभग पूरी तरह से ब्राह्मणों द्वारा रचित कृतियों पर आश्रित रहा।


mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- अल-बिरूनी ने भारतीय समाज को समझने के लिए अक्सर वेदों, पुराणों, भगवत्गीता, पतंजलि की कृतियों तथा मनुस्मृति आदि से अंश उदधृत किए।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अल-बिरूनी का जाति व्यवस्था का विवरण

- अन्य समुदायों में प्रतिरूपों की खोज के माध्यम से जाति व्यवस्था को समझने व व्याख्या करने का प्रयास किया।
- उसके अनुसार प्राचीन फारस में चार सामाजिक वर्गों को मान्यता थी
  - घुड़सवार और शासक वर्ग
  - भिक्षु, आनुष्ठानिक पुरोहित तथा चिकित्सक
  - खगोल शास्त्री तथा अन्य वैज्ञानिक तथा
  - कृषक तथा शिल्पकार

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- उसने यह दिखाने का प्रयास किया कि सामाजिक वर्ग केवल भारत तक ही सीमित नहीं थे।
- उसने यह भी दिखाने का प्रयास भी किया कि इस्लाम में सभी लोगों को समान माना जाता था उनमें भिन्नता केवल धार्मिकता के पालन में थी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- जाति व्यवस्था के सम्बन्ध में ब्राह्मणवादी व्याख्या को माना, परन्तु अपवित्रता की मान्यता को अस्वीकार किया– "हर वस्तु जो अपवित्र हो जाती है, अपनी पवित्रता की मूल स्थिति को पुनः प्राप्त करने का प्रयास करती है और सफल होती है।"
- वह जाति व्यवस्था में सन्निहित अपवित्रता की अवधारणा को प्रकृति के नियमों के विरूद्ध मानता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

वर्ण व्यवस्था

- अल-बिरूनी ने भारतीय वर्ण व्यवस्था का वर्णन निम्नानुसार किया है-

1. ब्राह्मण = अल बिरूनी के अनुसार ब्रह्मण सर्वोच्च वर्ण था।
   = उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा के मुख से
   = मुख का स्थान सबसे उच्च माना गया है।
   = इसी कारण हिन्दु जाति में सबसे उच्च स्थान दिया गया है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

2. क्षत्रिय = क्षत्रियों की उत्पत्ति आदिदेव ब्रह्मा के कन्धों व हाथों से।

= मुख के बाद द्वितीय स्थान कन्धों व बाहों का है।

= वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मणों के बाद द्वितीय स्थान पर रखा गया है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

3. वैश्य = वैश्य वर्ण की उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा के उदर व जंघा से मानी जाती है।

4. शूद्र = शूद्र वर्ण की उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा के चरणों से मानी गई है।

= वर्ण व्यवस्था में अंतिम चतुर्थ स्थान दिया गया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- अल-बिरूनी वैश्य व शूद्रों के मध्य अधिक अन्तर नहीं मानता।
- यद्यपि वर्ग भेद था फिर भी सभी लोग एक साथ ही गाँव या शहर में समरसता के साथ रहते हैं।
- जाति व्यवस्था के विषय में अल-बिरूनी का विवरण उसके नियामक संस्कृत ग्रन्थों के अध्ययन से गहनता से प्रभावित।
- इन ग्रन्थों में ब्राह्मणों के दृष्टिकोण से जाति प्रथा को संचालित करने वाले नियमों का प्रतिपादन किया गया था।

- वास्तविक जीवन में यह व्यवस्था इतनी कठोर नहीं थी।
- समाज में सबसे निम्न ''अंत्यज श्रेणियों'' से अपेक्षा की जाती थी कि वह किसानों व जमींदारों को सस्ता श्रम उपलब्ध करवाये।
- अर्थात् इस वर्ग को भी आर्थिक तंत्र में स्थान दिया गया।

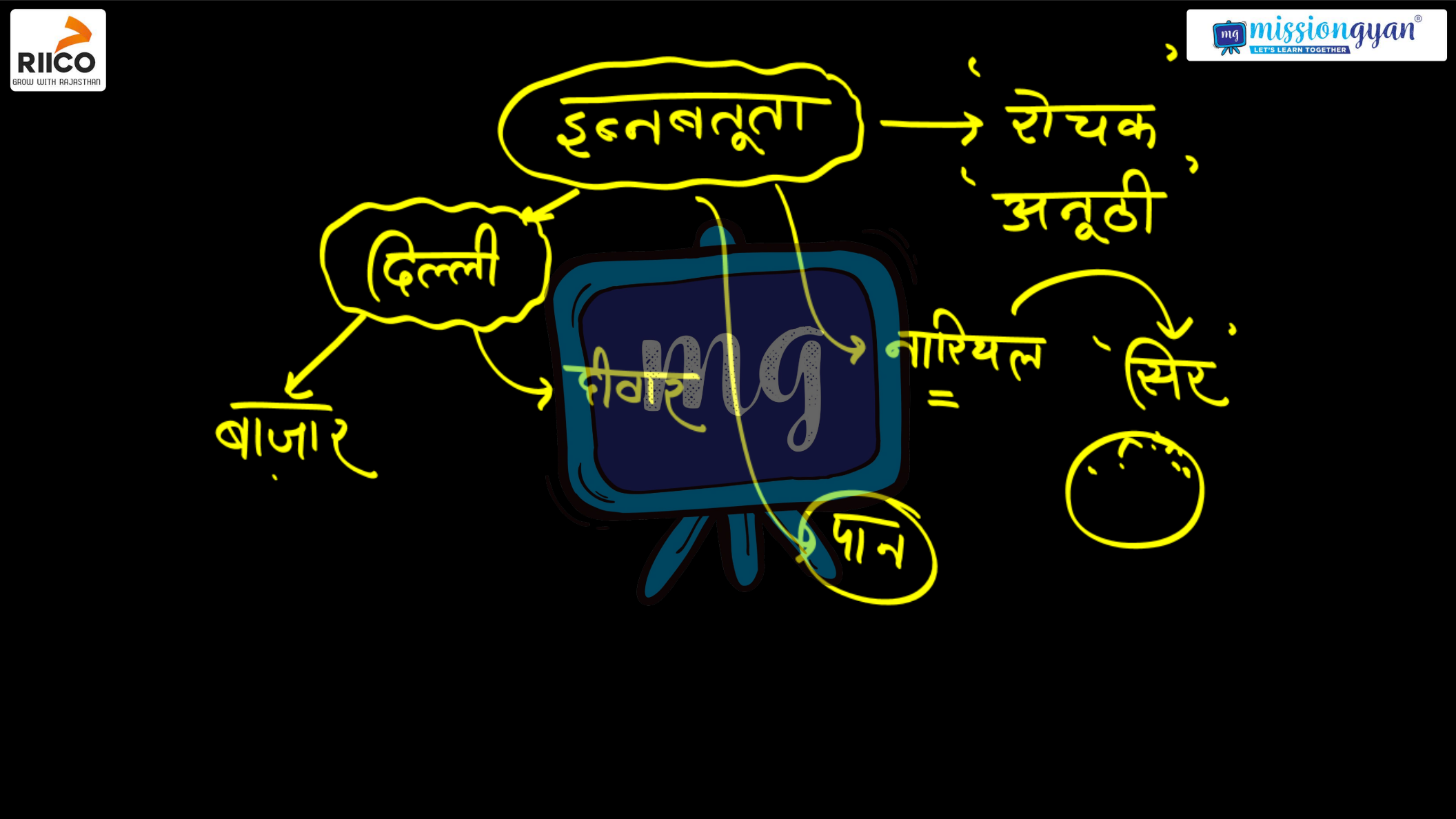
इब्नबतूता
रोचक
अनूठी
दिल्ली
बाज़ार
दीवार
नारियल
=
सिर
पानी